FOLLOW US ON: Anokha Teer Harda @anokhateer

दैनिक अनोखा तीर की पाक्षिक प्रस्तुति...

तपती धरती

हरदा- सोमवार 16 अक्टूबर 2023

www. anokhateer.com

निरंतर टिकाऊ विकास की अवधारणा को धरातल पर उतारने का अभियान

आत्मनिर्भर कृषक आत्मनिर्भर कृषि

गौरीशंकर मुकाती
एम.डी. रूपई एग्री फॉरेस्ट

परिवर्तन ही सृष्टि का नियम है और हमारी जरूरतें ही हमारे नजरिए में फर्क लाती है। आज समूची दुनिया भौतिक विकास की दौड़ में लगी हुई है। अच्छी बात है, मैं विकास का विरोधी नहीं हूं। लेकिन विनाश के रास्ते से विकास करना किसी भी राष्ट्र और मानव सभ्यता ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के लिए हितकर नहीं होता। हमारे देश के प्रधानमंत्री ने भी आज यही आह्वान किया है कि हमें अपनी जीवन शैली में परिवर्तन करना होगा, अपने व्यापार व्यवसाय को पर्यावरण अनुकूल बनाना होगा। कहने का तात्पर्य है कि हमें पृथ्वी की रक्षा के साथ अपने जीवन की सुरक्षा और भावी पीढ़ी के संरक्षण को दृष्टिगत रखते हुए अपने विकास को अंजाम देने की आवश्यकता है। आज दुनिया को निरंतर टिकाऊ विकास की दिशा में ठोस कदम उठाना होगा।

मानव सभ्यता विकास के शुरुआती दौर में प्रकृति प्रदत्त वस्तुएं ही हमारी आजीविका निर्वाह का मूल साधन हुआ करती थी। हमने प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का दोहन करते-करते उसका शोषण करना शुरू कर दिया है। हम विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने लगे। इसके दुष्परिणाम आज समूची दुनिया के सामने आ रहे हैं। समुद्रों का जलस्तर बढ़ना हो चाहे सुनामी, धरती पर भूकंप हो चाहे नदियों में बाढ़, अतिवर्षा, सूखा संकट जैसे पर्यावरण परिवर्तन से उत्पन्न खतरें हो, यह सब हमारे द्वारा प्रकृति के साथ किए गए खिलवाड़ का ही प्रतिफल है। ग्लोबल वार्मिंग जैसे भयानक खतरें की आहट से आज पूरी दुनिया चिंताग्रस्त है। ऐसी स्थिति में निरंतर चिंतन, मनन, मूल्यांकन ही एक जागरूक समाज की पहचान है। हमारी सभ्यता के शुरुआती दौर में वनों की कटाई कर उसे अनाज उत्पादन हेतु खेतों में तब्दील करना हमारी महती आवश्यकता थी। लेकिन हमने इसे निरंतर जारी रखते हुए पृथ्वी के संतुलन को ही असंतुलित करने का काम कर दिया। हरित क्रांति के बाद हमने अधिक उत्पादन के दबाव में कृषि का क्षेत्र बढ़ाते हुए वृक्षादित क्षेत्र को निरंतर कम करने का कार्य किया है। जिसका सर्वाधिक प्रभाव स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र पर पड़ा हैं और इसके परिणाम भी गांव और किसानों को आर्थिक अनिश्चितता के रूप में झेलना पड़ रहा है। जिससे आज कृषकों की खिन्नता, आक्रोश, निराशा और आत्महत्या जैसे कदम देखने को मिल रहें हैं। इस उपभोक्तावादी समय में सब कुछ मांग और आपूर्ति पर निर्भर है। हम आज दलहन, तिलहन और हजारों करोड़ की काष्ठ का आयात कर रहे हैं तो वहीं हम खाद्यान्न भंडारण के लिए संघर्षरत हैं। इसलिए आत्मनिर्भर बनने के लिए इस असंतुलन को समाप्त करने की आवश्यकता है। हमने समाज की इसी वर्तमान आवश्यकता और भविष्य के संभावित खतरें के स्थाई समाधान को दृष्टिगत रखते हुए अपनी कार्ययोजना तैयार की है। आत्मनिर्भर कृषक, आत्मनिर्भर कृषि। चूंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है तो हमें किसानों की भविष्य निधि संरक्षित करते हुए निरंतर टिकाऊ विकास की अवधारणा पर ही विकसित विश्व की इमारत बनाना होगा।

(शेष पृष्ठ 2 पर...)

कैसे साकार हुई 1 करोड़ 20 लाख पौधरोपण की परिकल्पना

आकार ले रही किसानों की भविष्य निधि की परिकल्पना

चिंतन, मनन और मूल्यांकन जागरूक समाज की पहचान

मेरी धरती मेरा जीवन

हमें इसी धरती पर अपनी जीवन यात्रा को मंगलमय बनाना है तो इसके लिए उन कार्यों को अपनी प्राथमिकता में शामिल करना होगा जो सुखमय जीवन के लिए आवश्यक है। जिसमें पहली और सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है शुद्ध हवा अर्थात आक्सीजन। हमने हाल ही के वर्षों में कोरोनाकाल दौरान आक्सीजन की महत्वत्ता को भली भांति देखा है। दूसरी आवश्यक है शुद्ध पानी और शुद्ध आहार। दुर्भाग्यवश आज हमारे पास जीवन मूल्य की उपरोक्त तीन आवश्यकता की शुद्धता का भरपूर अभाव है। पर्यावरण प्रदूषण, घटते वन और कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से हमने मिट्टी, पानी और हवा सब को प्रदूषित कर दिया है। सदा निरा रहने वाली नदियां अपने अस्तित्व को लेकर जुझती नजर आ रही है। इसलिए हमें मौजूदा व्यवस्था के बीच ही इसके बेहतर प्रबंधन का रास्ता अपनाना होगा। हमने मेरी धरती मेरा जीवन की मूल भावना के साथ अपनी परिकल्पना को आकार और साकार करने की पहल शुरू की है।

परिकल्पना और क्रियान्वयन

वैसे तो मेरे द्वारा पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में वर्षों से काम किया जा रहा है। निजी कृषि भूमि पर इमारती सागोन का रोपण मेरे द्वारा लगभग 25 पहले शुरू किया गया था। मेरे इस शुरुआती दौर में जिन किसानों ने खंडवा जिले की हरसूद तहसील अंतर्गत रुपारेल नदी के तटवर्ती अपने खेतों में सागौन लगाया था आज वह लाखों का सागौन बेचकर भी करोड़ों के मालिक बने हुए हैं। किसानों की भविष्य निधि और आत्मनिर्भरता के इस मूल मंत्र को हमने विस्तार देने का मानो एक बीड़ा उठाया और जुट गए एक वृहद अभियान की ओर। हमने नदी बचाओं समृद्धि लाओं का नारा देते हुए हरदा, खंडवा जिले के किसानों के बीच कार्य की शुरुआत की। लोगों को नदी नालों के किनारे स्थित उनकी कृषि भूमि पर बांस, सागौन, खमेर जैसे पौधे निशुल्क उपलब्ध कराते हुए लगाने के लिए प्रेरित किया। इसी के साथ वनांचल में गरीब परिवारों के बीच आंगन धन योजना बनाकर उनकी झोपड़ी के आसपास, आंगन में, खलिहान में सागौन और फलदार पौधों का रोपण भी कराया। खेती का रकबा कम किए बगैर उनकी उपयोग हीन भूमि पर वृक्षारोपण के हमारे इस अभियान की जन चर्चाएं जिले और प्रदेश की सीमाएं पार करती चली गई। हमारे हौसलों को और ऊंची उड़ान प्रदान कर उन्हें सात समुंदर पार ले जाने का कार्य किया विक्रांत तिवारी ने, जो वर्तमान में आईएमपीसीए के डायरेक्टर हैं और कार्बन क्रेडिट जैसे विषयों पर लंबे समय से अपनी सेवाएं प्रदान करते हुए लाखों सफल वृक्षारोपण करवा चुके हैं। जब श्री तिवारी ने हमारे मैदानी कार्यों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया तो उन्होंने इसे लेकर एक वृहद कार्ययोजना के साथ काम करने का रास्ता सुझाया। जिससे हमारे इस पौधरोपण अभियान को आर्थिक समृद्धता के साथ सिंगापुर, अमेरिका, साउथ कोरिया जैसे देशों की कंपनियों से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी के साथ अस्तित्व में आई रुपई एग्री फारेस्ट प्राइवेट लिमिटेड जो एक विशाल वृक्षारोपण अभियान का माध्यम बनी। चूंकि हम तो सीधे तौर पर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में समाज के बीच कार्य करते रहे। हमने कभी इसे व्यवसायिक दृष्टिकोण से नहीं देखा था, परंतु जब आईएमपीसीए के डायरेक्टर विक्रांत तिवारी ने बताया कि हमें इस कार्य को विस्तार देने के लिए एक कंपनी रजिस्टर्ड कराना चाहिए और इसे एक प्रोजेक्ट फार्म में बनाया जाकर करना चाहिए। तब हमने रुपई एग्री फारेस्ट प्राइवेट लिमिटेड बनाई गई। श्री तिवारी ने ही हमारा संपर्क व्ही.एन.व्ही. सिंगापुर, ग्रो ट्रीस जैसी कंपनियों से करवाते हुए इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। जिससे आज हमने एक करोड़ बीस लाख पौधरोपण की वृहद कार्ययोजना को जमीन पर उतारने का कार्य किया है। हमारी इस कार्ययोजना पर किस कंपनी के माध्यम से किस किस क्षेत्र में कार्य किया गया या किया जा रहा है वह हम आगे विस्तार से चर्चा करेंगे। तपती धरती का यह अंक इस बार एक करोड़ बीस लाख पौधरोपण अभियान पर ही केन्द्रित किया जा रहा है। जिसमें उन अधिकांश किसानों के सचित्र विचार भी प्रकाशित किए जा रहे हैं जिन्होंने अपने खेतों की मेढ़ पर पौधे लगाए हैं। वही इस कार्ययोजना में विभिन्न मोर्चों पर अपनी अपनी भूमिका निभाते हुए कार्य करने वाले साथियों के अनुभव आदि प्रकाशित किए जा रहे हैं।

हमारा उद्देश्य

पर्यावरण संरक्षण और ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से बचने की दिशा में अनेक मोर्चों पर कार्य करने की आवश्यकता है। उसमें वृक्षारोपण एक महत्वपूर्ण कदम है। हम इसे न केवल पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से बल्कि किसानों को आर्थिक रुप से सक्षम बनाते हुए उनकी भविष्यनिधि तैयार करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण पहल के रुप में देखते है। हमारा उद्देश्य है कि किसानों की उपयोगहीन भूमि का उपयोग कर हम इससे एक निश्चित निरंतर आय की व्यवस्था बना सके। इसी तरह पर्यावरण संतुलन, भूजल संवर्धन, भूमि संरक्षण, नदियों के कटाव को रोकने के साथ ही कृषि कार्य में उपयोग में लिए जाने वाले कीटनाशकों के प्रभाव से जल जीवों को बचाने की दिशा में भी यह एक कारगर उपाय साबित हो। देश की आर्थिक समृद्धि की दृष्टि से काष्ट आयात पर होने वाले बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च को बचाया जाए। इसी के साथ भविष्य में लोहा और सीमेंट पर निर्भरता कम करने की भी परिकल्पना है। वहीं शासकीय वनों पर दबाव कम होगा। लम्बे समय से वानिकी कार्यों में जुड़े किसानों के अनुभव के आधार पर हम अपनी इस परिकल्पना को आगे बढ़ाने की दिशा में प्रयासरत है।

प्रतिफल

किसानों को प्रेरित कर उनकी उपयोगहीन भूमि पर रोपे जाने वाले सागौन, खमेर जैसी इमारती लकड़ी के पौधों से आने वाले लगभग 15-20 वर्ष में करोड़ों घनमीटर इमारती काष्ट तैयार होगी। आज किसान शायद इस बात की कल्पना भी नहीं कर पा रहा है कि जो पौधे वह आज अपने खेतों की मेढ़ों पर, खेत खलिहान की सीमा की बागड़ पर रोप रहा है वह अगले 20 वर्ष में वर्तमान मूल्य से लाखों करोड़ की सम्पदा के रुप में तैयार होगी। जो उसके कृषि उत्पाद से होने वाली शुद्ध आय से कहीं अधिक हो सकती है। इसी के साथ इस पौधरोपण से करोड़ों टन मिट्टी खेतों से बहकर नदियों की तलहटी में जमा होने और समुद्र में जाने से बचेगी। जिससे बाढ़ का खतरा भी कम होगा। क्षेत्र में घने वृक्षों से स्थानीय स्तर पर तापमान में कमी आएगी और रबी फसल का उत्पादन बढ़ेगा।

हमारे पैरों के नीचे हरा सोना : मल्चिंग के लाभों का पता लगाना

■ Chubasenla Jamir
Bangalore

बागवानी और भूदृश्य – चित्रण की दुनिया में मल्चिंग गुमनाम नायक की तरह है, जो चुपचाप सतह के नीचे अपना जादू चला रहा है। हालाँकि अक्सर इसे कम करके आंका जाता है। यह अभ्यास ढेर सारे लाभ प्रदान करता है जो आपके बगीचे को एक संपन्न खलिस्तान में बदल सकता है। आइए मल्चिंग की दुनिया में उतरें और इसमें छिपे हरे रहस्यों को उजागर करें। सीधे शब्दों में कहें तो मल्चिंग आपके पौधों के चारों ओर की मिट्टी को कार्बनिक या अकार्बनिक पदार्थों की एक सुरक्षात्मक परत से ढकने का कार्य है। इस परत में लकड़ी के चिप्स, पुआल, पत्तियाँ यहाँ तक की प्लास्टिक जैसी सामग्रियाँ शामिल हो सकती हैं। लेकिन इस अतिरिक्त कदम से परेशान क्यों? इसका उत्तर आपके बगीचे में होने वाले उल्लेखनीय लाभों में निहित है।

मल्चिंग के फायदों की खोज

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मल्चिंग आपकी मिट्टी के लिए ढाल का काम करती है। यह मिट्टी के तापमान को नियंत्रित करता है,

चिलचिलाती गर्मियों के दौरान इसे ज्यादा गरम होने से बचाता है और सर्द सर्दियों में इसे गर्म रखता है। यह जड़ पर्यावरण को स्थिर करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि आपके पौधे साल भर स्वस्थ रहें। इसके अलावा गीली घास एक भयानक खरपतवार निवारक के रूप में कार्य करती है। खरपतवार वे हानिकारक आक्रमणकारी, गीली घास की परत के नीचे छुपे होने पर सूर्य के प्रकाश से वंचित हो जाते हैं, जिससे उनका अंकुरित होना कठिन हो जाता है। यह संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा को कम करता है, जिससे आपके पौधे पनपते हैं। वास्तव में 2019 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि मल्चिंग से खरपतवार की वृद्धि में 75 प्रतिशत की प्रभावशाली कमी आई।

जल संरक्षण मल्चिंग का एक और महत्वपूर्ण लाभ है। मिट्टी और सूरज के बीच एक बाधा के रूप में कार्य करके, गीली घास वाष्पीकरण को धीमा कर देती है, जिससे आपके पौधों के लिए कीमती नमी सुरक्षित रहती है। अमेरिकी पर्यावरण संरक्षक जेंसी का कहना है कि मल्चिंग से बगीचों में पानी के उपयोग को 50 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है, जिससे यह पर्यावरण - अनुकूल विकल्प बन जाता है। मल्चिंग मिट्टी के स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देती है। जैसे ही गीली घास विघटित होती है, यह मिट्टी को मूल्यवान पोषक तत्वों से समृद्ध करती है, जिससे उसकी उर्वरता बढ़ती है। यह प्राकृतिक उर्वरक रासायनिक योजकों की आवश्यकता को समाप्त करता है और अधिक टिकाऊ बागवानी अभ्यास में योगदान देता है।

मल्चिंग और खेती साथ-साथ चलती है, क्योंकि मल्च आपके बगीचे या खेत के लिए सिर्फ एक दृश्य वृद्धि से कहीं अधिक काम करता है। यह मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, पानी बचाने, खरपतवार की वृद्धि को रोकने और लगातार तापमान स्तर बनाए रखने के लिए एक प्राकृतिक, पर्यावरण के अनुकूल और कुशल विधि का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए जब आप बागवानी या खेती में उद्यम करते हैं, तो अपने टूल बॉक्स में गीली घास को शामिल करने के बारे में सोचें। यह आपके पैरों के नीचे एक अमूल्य संसाधन हो सकता है जो आपकी हरी भूमि को एक समृद्ध खलिस्तान में बदल देता है।

आत्मनिर्भर कृषक-आत्मनिर्भर कृषि अभियान की कहानी आंकड़ों की जुबानी

Row Labels	Count of Sheesham Farmer	Sum of Sheesham Planted	Count of Sagon Farmer	Sum of Sagon Planted	Count Of Mungna Farmer	Sum of Mungna Planted	Count Of Khameer Farmer	Sum of Khameer Planted	Count Of Kathal Farmer	Sum of Kathal Planted	Count Of Jamun Farmer	Sum of Jamun Planted	Count Of Jaam Farmer	Sum of Jaam (Guava) Planted	Count Of Bamboo Farmer	Sum of Bamboo Planted	Count of Total Farmer	Sum of Plantation Total
Dolariya	148	8351	4063	2194852	1066	59448	521	96383	852	35932	3	150	1786	125209	1055	203688	4220	2724013
Itarsi	71	23350	5876	2762328	1604	173123	487	110121	1754	77350	427	11863	2441	232829	1145	282699	6536	3673663
Seoni-malwa	135	37287	1721	1072495	40	2213	111	21844	197	19758	7	915	273	36054	749	723345	2281	1913911
Nasrullaganj	3	350	2366	1189756	3	140	241	91510	131	7120	5	685	330	38267	140	22285	2607	1350113
Rehti	60	5365	2378	1250214	296	19134	26	7248	533	55818	42	1143	928	107714	205	44448	2830	1491084
Grand Total	417	74703	16404	8469645	3009	254058	1386	327106	3467	195978	484	14756	5758	540073	3294	1276465	18474	11152784

Row Labels	Count of Halka	Count of Village	Count of Farmer	Sum of Sheesham Planted	Sum of Sagon Planted	Sum of Mungna Planted	Sum of Khameer Planted	Sum of Kathal Planted	Sum of Jamun Planted	Jaam (Guava) Planted	Sum of Bamboo Planted	Sum of Plantation Total
Narmdapuram	**148**	**13037**	**13037**	**68988**	**6029675**	**234784**	**228348**	**133040**	**12928**	**394092**	**1209732**	**8311587**
Dolariya	37	71	4220	8351	2194852	59448	96383	35932	150	125209	203688	2724013
Itarsi	57	133	6536	23350	2762328	173123	110121	77350	11863	232829	282699	3673663
Seoni-malwa	54	78	2281	37287	1072495	2213	21844	19758	915	36054	723345	1913911
Sehore	**65**	**108**	**5437**	**5715**	**2439970**	**19274**	**98758**	**62938**	**1828**	**145981**	**66733**	**2841197**
Nasrullaganj	24	42	2607	350	1189756	140	91510	7120	685	38267	22285	1350113
Rehti	41	68	2830	5365	1250214	19134	7248	55818	1143	107714	44448	1491084
Grand Total	213	382	18474	74703	8469645	254058	327106	195978	14756	540073	1276465	11152784

Row Labels	Count of Sheesham Farmer	Count of Sagon Farmer	Count Of Mungna Farmer	Count Of Khameer Farmer	Count Of Kathal Farmer	Count Of Jamun Farmer	Count Of Jaam Farmer	Count Of Bamboo Farmer	Count of Total Farmer
Dolariya	148	4063	1066	521	852	3	1786	1055	4220
Itarsi	71	5876	1604	487	1754	427	2441	1145	6536
Seoni-malwa	135	1721	40	111	197	7	273	749	2281
Nasrullaganj	3	2366	3	241	131	5	330	140	2607
Rehti	60	2378	296	26	533	42	928	205	2830
Grand Total	**417**	**16404**	**3009**	**1386**	**3467**	**484**	**5758**	**3294**	**18474**

किसान घुड़न सिंह
ग्राम गजपुर, तह. इटारसी

उन्होंने अपने शब्दों में बताया कि मैं गौरीशंकर मुकाती दादा द्वारा किसानों के हित में ये जो आम के आम -गुठलियों के दाम जैसी योजना से प्रभावित होकर अपनी छोटी से खेती की मेड़ पर मेरे द्वारा पौधे लगाए गए हैं। यह हमारे पर्यावरण को तो सुधारेंगे ही साथ में मेरे बच्चों के भविष्य में भी काम आयेंगे और उनकी जरूरत को भी पूरी करेंगे तो मैं दिल से धन्यवाद देता हूं।

अपना भी हाल तेरे जैसा....

सही पूछा जाए तो हर छोटी जोत वाले किसान की स्थिति एक जैसी है। वह जैसे तैसे अपनी खेती से परिवार का सालाना खर्चा तो निकाल लेता है, लेकिन भविष्य के लिए उसके पास कुछ जमा पूंजी बच जाए ऐसा मुश्किल है। बड़े किसानों की अलग बात है। लेकिन हर छोटे किसान के लगभग यही हाल होते है। खर्चे भी इतने होते है कि भविष्य की सोचे तो भी कुछ बचा नहीं पाते। जब मुझे रुपई एग्री फारेस्ट कंपनी के फील्ड अधिकारी ने बताया कि हम आपके खेत की मेंढ पर पौधे लगाकर आपकी भविष्य निधि तैयार कर सकते है तो पहले मुझे लगा कब मरेगी सासू कब आएंगे आंसू। किसने देखे है 15-20 साल। लेकिन जब उन्होंने कहा कि फलदार पौधे तो आपको दो चार साल में ही आय देने लगेंगे और बाकि के 15-20 साल में इतनी आय देंगे जितनी आप एक एकड़ में दो फसल लेकर भी नहीं कमा सकते। मैनें गुणा भाग भी लगाया। बात तो सोलह आना सही है। फिर मैनें अपने दो एकड़ खेत की मेंढ पर सभी प्रकार के पौधे लगवा लिए। जिसमें जाम, मूंगना, कटहल और सागौन कुल मिलाकर 200 पौधे लगवाए है। मूंगना तो साल भर में ही पैदा देने लगता है बाकि 4-6 साल लेंगे। और बाद में सागौन तो अपनी एफडी का काम करेगा ही। इसके साथ ही हम पर्यावरण के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे है यह अलग बात है। पशु-पक्षी के लिए भी तो इससे भोजन मिलेगा। कुल मिलाकर घाटा किसी तरह का नहीं है और फायदा हर तरफ है। इसलिए मैं कंपनी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे अपने इस अभियान में शामिल किया।

अखिलेश मन्नालाल बारस्कर
भरगदा, इटारसी

विनोद बामनिया
(फील्ड आफिसर) नसरूल्लागंज, जिला सीहोर

रूपई एग्री फॉरेस्ट के सौजन्य से प्रकृति की सुंदरता तथा पर्यावरण संतुलन, किसानों की भविष्य निधि तथा उससे होने वाली आय जिसका लाभ किसानों को मिले ऐसे कार्य करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। आत्मनिर्भर कृषक-आत्मनिर्भर कृषि की गरिमामय पहल का मुझे हिस्सा बनने का अवसर प्राप्त हुआ। जिस प्रकार किसी पिता को अपने परिवार और बच्चों के भविष्य की और बच्चों को अपने मां बाप के भविष्य की चिंता रहती है उसी प्रकार हमारा भी फर्ज है कि हम प्रकृति और अपनी धरती मां की सुंदरता और वनों की रक्षा के लिए चिंतित रहे और कर्मठ बने। सभी से मेरा विनम्र आग्रह है कि जिस प्रकार हम अपनों से और अपने आपसे प्रेम करते है उसी प्रकार प्रकृति से प्रेम करें और अधिक से अधिक पौधे लगाए, जिससे आने वाला समय और भी बेहतर होगा।

अनिल सक्सेना
ग्राम- जमानी, तहसील-इटारसी

मेरी वैसे भी पर्यावरण में बहुत रुचि है। जब रुपई एग्री फॉरेस्ट वालों ने अपनी योजना के बारे में बताया तो मेरे लिए मानों सोने पे सुहागा हो गया। मैनें अपने खेत में साढ़े सात हजार पेड़ लगवाए है। जिसमें 6 हजार तो सागौन, 500 अमरूद, 500 कटहल के पौधे लगे है। बड़ी बात यह है कि एक रुपया भी खर्चा नहीं हुआ। अब बस इनको बच्चों की तरह पालना मेरा मकसद है।

किसान लक्ष्मण सिंह
ग्राम गजपुर, तह. इटारसी

जब मुझे पता चला कि एक ऐसी परियोजना चल रही है जिससे वातावरण का सुधार तो होगा ही साथ में मेरे और मेरे परिवार की भविष्य में भविष्य की जरूरत भी पूरी होगी। इससे मेरे खेत में मेडो पर लगे वृक्ष हमेशा मुझे और राहगीरों को छाया भी देंगे। तब मैनें अपनी सहमति देकर अपनी मेंढों पर पौधे लगवाए।

मयंक तिवारी
ग्राम-जमानी, तहसील-इटारसी

मैंने रूपई एग्री फॉरेस्ट प्राइवेट लिमिटेड के कार्बन प्रोजेक्ट में अपने खेत की जमीन 1300 खमेर के पेड़ लगवाए। पौधों को पाल कर अपनी भविष्य निधि तैयार करुंगा।

तपती धरती संपादक मण्डल
सलाहकार संपादक गौरीशंकर मुकाती
संपादक प्रहलाद शर्मा
प्रबंध संपादक श्रीराम माहेश्वरी, भोपाल
अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि संदीप राय चौधरी, सिंगापुर
राष्ट्रीय प्रतिनिधि विक्रांत तिवारी, मुम्बई

किसानों का भविष्य संवारने की अनूठी योजना है पौधरोपण

अनउपयुक्त भूमि पर रोपे 25 लाख पौधे

रुपई एग्री फॉरेस्ट के माध्यम से मुझे जो कार्य मिला है वह केवल एक नौकरी करना भर नहीं बल्कि अपने मानव जीवन में प्रकृति के प्रति कुछ कर गुजरने का अवसर भी है। हमने टीम वर्क के साथ सिवनी मालवा क्षेत्र में 25 लाख विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण किसानों को प्रेरित कर उनकी उपयोगहीन भूमि पर करवाया है। आप कल्पना कर सकते है कि जब यह पौधे बड़े होंगे तो इस क्षेत्र के खेतों की सुंदरता और यहां के पर्यावरण की स्थिति देखने ही नहीं बल्कि लोगों के घूमने लायक होगी।

■ विश्वजीत पाण्डेय
विस्तारक, सिवनी मालवा

सभी पाठकों को मेरा नमस्कार। जैसा कि आप सभी लोगों को पता है कि पर्यावरण पृथ्वी पर रहने वाले हर एक जीव के लिए, हर एक वनस्पति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसका बिगड़ना संपूर्ण पृथ्वी के जीवन के लिए बहुत ही हानिकारक है। आज जितनी तेजी से जंगलों की कटाई हो रही है उस कारण पृथ्वी पर कार्बन अधिकता के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। जिस कारण ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव पृथ्वी पर दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। परिणामस्वरूप पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। यदि ऐसे ही चलता रहा तो आने वाले दिनों में धरती का तापमान इतना बढ़ेगा कि पृथ्वी पर मौजूद सभी ग्लेशियर तेजी से पिघलने लगेंगे। जिसके परिणामस्वरुप संपूर्ण पृथ्वी जलमग्न हो जाएगी और इस पृथ्वी में जीवन समाप्त हो जाएगा। इसलिए सभी को ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए और पेड़ों की कटाई पर रोक लगना चाहिए। जिससे की प्रकृति का संतुलन बना रहे और पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य जीव-जंतु, जानवर, वनस्पति फलते फूलते रहे।

मैं आप लोगों को बताना चाहूंगा कि मैं भी विगत दो वर्षों से कार्बन क्रेडिट के लिए रूपई एग्री फॉरेस्ट कंपनी के साथ मिलकर मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के सिवनी मालवा तहसील में 25 लाख पौधों का रोपण कार्य में जुटा हूं। हमारे रुपई एग्री फॉरेस्ट कंपनी के संस्थापक गौरीशंकर मुकाती के नेतृत्व में कार्य करने का मुझे अवसर मिला है। गौरीशंकर मुकाती ने कार्बन उत्सर्जन को कम करने वाले प्रोजेक्ट को सीधा किसानों के हित से जोड़ दिया है। जिसके तहत हम बहुउद्देश्यों के साथ इस कार्ययोजना को धरातल पर चरितार्थ करने में लगे हुए है। जिसका सीधा प्रभाव किसानों के भविष्य और पर्यावरण संरक्षण पर देखा जाएगा।

किसानों की होगी भविष्य निधि

इस योजना के अंतर्गत इस कार्य से जुड़े सभी लोग किसानों के संपर्क में आकर किसानों को जागरुक करने में लगे है। जिससे किसान अपने खेतों की मेंढ पर या बेकार पड़ी जगह पर जिसका उपयोग वह वर्षों से नहीं कर पा रहा है वहां पर सागौन, खमेर, शीशम जैसी कमर्शियल लड़कियों के पौधों के रोपण कराए गए। 15 से 20 साल के बाद होने वाली इन पेड़ों की आय से वह अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकेगा। बात तो वही हुई कि आम के आम गुठलियों के दाम। इस रोपण के माध्यम से किसानों की आय तो बढ़ेगी ही बढ़ेगी साथ में पेड़ पौधे ज्यादा मात्रा में लगने से पर्यावरण में भी सुधार होगा। जिसके फलस्वरुप धरती पर रहने वाले विभिन्न प्रकार के जीवों और मानव जाति के स्वास्थ्य पर सही प्रभाव पड़ेगा।

नदी बचाओं समृद्धि लाओं

इस योजना के अंतर्गत जिन किसानों की जमीन नदी-नालों के किनारे है उन किसानों के इस जगह पर या नदी किनारे हम बांस के पौधों का रोपण करते हैं। जिससे मिट्टी का कटाव रुक सके। क्योंकि आज हम देख रहे हैं कि नदी-नाले किनारे पेड़-पौधे ना होने के कारण लाखों टन मिट्टी बहकर नदी-नालों के माध्यम से समुद्र में जाती है। इस कारण समुद्र का जलस्तर बढ़ता जा रहा है। जिससे सुनामी और बेमौसम बारिश के कारण पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों को बहुत बड़ी आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए हम किसानों को यह भी जागरुक करते हैं कि वह ज्यादा से ज्यादा पौधे अपने नदी किनारे वाले खेतों पर लगाए। जिससे उनके खेतों की मिट्टी का कटाव भी रुकेगा और नदियां भी सुरक्षित रहेगी। इससे गांव में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का जीवन सुधरेगा। नदियां स्वस्थ रहेगी, सुरक्षित रहेगी तो आने वाले समय में किसानों की फसलों में सिंचाई के लिए उन नदियों में पानी की पर्याप्त मात्रा बनी रहेगी, जिससे हर एक किसान का जीवन समृद्ध बनेगा।

आंगन धन योजना

इस योजना के अंतर्गत हम उन लोगों तक पहुंचते हैं जो भूमिहीन होते हैं। जिनके पास खेती करने के लिए कोई जमीन नहीं होती तो उनके लिए हम आंगन धन जैसी योजना को लेकर आए है। जिसके अंतर्गत हम उन लोगों के घर के आंगन में बाड़ी, बागुड़ में कुछ फलदार, कुछ कमर्शियल लकड़ियों का पौधा रोपित करते हैं। जिसके कारण आने वाले समय पर उनको भी एक अच्छी आय अपने आंगन से मिल सके।

साथियों इस 25 लाख पौधों के रोपण के दौरान कुछ चुनौतियां भी हमारे सामने आई, जिनमें हमको सुधार करने की आवश्यकता है। जैसे हमने देखा कि इस कार्य को करने के लिए जिम्मेदार लोगों की टीम होनी चाहिए। जिनका कार्य किसानों के संपर्क में रहना, उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरुक करना, ताकि उन्हें उनकी जमीन से एक अच्छी आय मिल सकें। किसानों की जागरूकता के बिना किसानों की जमीन पर पौधारोपण करना और उनकी एक बेहतर जीवंतता पाना बहुत ही मुश्किल है। उनको बचाना किसी एक की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि समाज में रहने वाले हर एक व्यक्ति की भागीदारी है। मेरा सभी से निवेदन है कि वह अपने जीवन में ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाए ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण बना रहे। ताकि वह सभी लोग अपना जीवन अच्छे से जी सकें। आज अगर हर एक व्यक्ति जो इस धरती पर रह रहा है दो पेड़ का भी रोपण सालाना करता है तो करोड़ों पौधे इस धरती पर लग सकते हैं और हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहेगा। जिसका लाभ संपूर्ण जीवमात्र को होगा।

कृषक अशोक कहार, ग्राम- लोखरतलाई, सिवनी मालवा

मेरे पास तीन एकड़ का खेत है। परंपरागत तौर पर अलग-अलग फसलें खेती के माध्यम से लेता हूं। पर मैनें कभी नहीं सोचा था कि मेरे खेत की मेंढ़ भी मुझे आमदनी दे सकती है। रुपई एग्री फॉरेस्ट के फील्ड अधिकारियों ने जब मुझे निःशुल्क पौधे मेंढ़ पर लगाने की सलाह दी और बताया कि आने वाले 15-20 साल में आपके यह पौधे लाखों रुपए की आमदनी देंगे। वैसे भी मेंढ की भूमि और बागड़ की जगह हमारे किसी काम की नहीं थी। वहां पर कंपनी द्वारा 300 सागौन के पौधे लगाए गए है। बड़ी बात यह है कि मुझे एक रुपया भी खर्च नहीं करना पड़ा। पौधे से लेकर उनकी लगवाई तक सब कंपनी द्वारा की गई। अब इन पौधों की देखरेख कर इनका पालन-पोषण करने की जवाबदारी मेरी है। चूंकि इनसे होने वाली आय भी तो मेरी ही होगी। जब यह पौधे बड़े होकर कतारबद्ध खेत के चारों ओर नजर आएंगे तो कितना सुंदर लगेगा इसकी कल्पना की जा सकती है। और फिर अभी तक तो हम पेड़ काटते ही आए है लगाने का अवसर तो अब मिला है। इसके लिए मैं रुपई कंपनी को धन्यवाद देता हूं।

कृषक गजेन्द्र करण सिंह, ग्राम- नानका, डोलरिया

मैनें अपने खेत की मेंढ पर 700 सागौन के पेड़ लगवाएं है। यह पौधे और इनको लगाने का कार्य सब कुछ हरदा की रुपई एग्री फॉरेस्ट कंपनी ने किया है। हमने तो बस केवल अपने खेत की मेंढ पर यह पौधे लगाने की सहमति भर दी थी। लेकिन आज जब पौधे लग गए तो हमें लगा कि अगर हमने इनकी देखरेख कर ली और यह बड़े हुए तो लाखों रुपए की आय केवल खेत की मेंढ से हो जाएगी। अब तो मेरा लगभग रोज का ही काम हो गया है कि मैं इन पौधों को देखने जाता हूं। खेत भी घूम आता हूं और पौधे भी देख लेता हूं। फिलहाल तो बारिश के कारण पानी की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल गर्मी के दिनों में ही इन पर ध्यान देने की जरुरत है। 2-4 साल अगर अच्छे से ध्यान दिया तो फिर वह खुद अपनी रफ्तार बढ़ जाएंगे।

कृषक गंभीर सिंह लौवंशी, ग्राम- भैंसादेह, सिवनी मालवा

ऐसा काम पहली बार देखा कि हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा। मेरे 35 एकड़ खेत की मेंढ पर हरदा की रुपई एग्री फॉरेस्ट कंपनी द्वारा 1900 सागौन के पौधे लगाए गए। अगर हम खुद कोशिश करते तो शायद इतने पौधे मिल भी नहीं पाते। लेकिन इस कंपनी ने तो कमाल कर दिया। न हमारा एक रुपया लगा और न रोपने की झंझट। सब कुछ काम कंपनी द्वारा करवाया गया। अब बस हमारी जवाबदारी यही है कि इनकी देखरेख करें। कल को बड़े होकर हमारे और हमारे परिवार के लिए यह एक बीमे जैसे काम हो गया है। मैं तो दूसरे किसानों से भी यही कहूंगा कि अपनी खाली जमीन पर ऐसे पौधे लगवाएं।

विक्रम चौधरी
(फील्ड आफीसर) रामपुर, इटारसी सेक्टर

कछुआ, खरगोश से जीता, क्योंकि वो धीरे चला, लगातार चला। ठीक उसी प्रकार हम भी निरंतर रूपई एग्री फॉरेस्ट के माध्यम से वृक्षारोपण और वृक्ष संरक्षण करके पृथ्वी पर निरंतर बढ़ रहे। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसे खतरे को नियंत्रण करने का प्रयास सतत करते रहेंगे। इस कॉर्बन क्रेडिट प्रोजेक्ट में जो आत्मनिर्भर किसान और आत्मनिर्भर खेती में मेरा किसानों के साथ जो अनुभव रहा वह बहुत अच्छा रहा क्योंकि आज किसान इतना जागरूक है कि वह भी भली-भांति इस खतरे से अवगत है। वह भी इसके प्रति जागरूक है और इस परियोजना में किसानों द्वारा भी बढ़ चढ़कर अपना साथ दिया।

कुलदीप मालाकार
(फील्ड आफिसर) सेक्टर केसला, तह. इटारसी

मेरा नाम कुलदीप मालाकार है और मैं ग्राम पोखरकलां जिला खंडवा का रहने वाला हूं। मैंने स्नातक कोर्स बीएससी ऑनर्स एग्रीकल्चर जवाहरलाल नेहरू कृषि महाविद्यालय पवारखेड़ा जिला नर्मदापुरम से किया है। मैं पिछले एक साल से रूपई एग्री फॉरेस्ट प्रा. लि. हरदा संस्था में फील्ड ऑफिसर के पद पर कार्य कर रहा हूं। रूपई एग्री फॉरेस्ट प्रा. लि. द्वारा वीएनवी एडवाइजरी के सहयोग चलाई जा रही 1 करोड़ 20 लाख पौधे की कार्बन क्रेडिट परियोजना में मैं सेक्टर केसला तहसील इटारसी में कार्यरत था। केसला ब्लॉक में मैंने 17 पटवारी हल्के में 17 प्रेरकों के सहयोग से 18.5 लाख पौधों का सफल रोपण कराया।

रूपई एग्री फॉरेस्ट प्रा.लि. द्वारा जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के साथ-साथ जन समुदाय के प्रति भी कार्य कर रही है , क्योंकि रूपई के द्वारा किसानों को बहुमूल्य इमारती और फलदार पौधे निशुल्क दिए जाते और इन पौधों को खेत तक ले जाकर लगाया भी जाता है। किसानों को भी इस परियोजना से बहुत ही खुशी होती है कि यह परियोजना हमारे क्षेत्र में आई। जब हम फील्ड विजिट पर किसानों से मिलते है तो किसान उत्साह के साथ बताते है कि जो हमने खेत की मेड़ों पर सागवान के पौधे रोपित किए है यह सागवान के 100 पौधे से ही आने वाले 20 वर्षो बाद 15-20 लाख रुपए की इमारती लकड़ी प्राप्त होगी। फील्ड पर किसानों से भी बढ़िया प्रतिक्रिया मिलती है। पौधारोपण के समय पर जब मजदूरों से मिलते थे तो उन्हें बहुत खुशी होती थी। वह कहते है कि रूपई की इस परियोजना से हमें रोजगार के अवसर प्राप्त हुए और हमें मजदूरी भी समय-समय पर मिलती रही और हमने भी 1.20 लाख पौधारोपण की इस बड़ी परियोजना में सहयोग प्रदान किया।

रामस्वरुप लौवंशी
लोखरतलाई, सिवनी मालवा

मैं नर्मदापुरम जिले की सिवनी मालवा तहसील के ग्राम लोखरतलाई का किसान हूं। मेरा खेत नदी के किनारे पर है। प्रतिवर्ष बारिश के दौरान नदी की बाढ़ के कारण और कटाव बढ़ता जा रहा है। वहीं खेत की मिट्टी भी बारिश के पानी में बहकर नदी में जाती है। इस कटाव को रोकने के लिए पहले मैनें 250 पौधे बांस के अपने पैसों से खरीदकर लगाए थे। हाल ही में जब मुझे रुपई एग्री फॉरेस्ट संस्था के बारे में पता चला कि यह निःशुल्क पौधे देकर उसका रोपण भी स्वयं करवा रही है तो मैनें खुद आगे होकर कंपनी के फील्ड अधिकारी से संपर्क किया। उनसे इस योजना के बारे में समझा तो उन्होंने बताया कि इससे हमें ना तो पौधों के पैसे देना होगा और ना उसकी लगवाई, लेकिन पौधों के मालिक आप स्वयं होंगे। कंपनी केवल पर्यावरण संरक्षण और कार्बन क्रेडिट की दृष्टि से यह अधिक से अधिक पौधों के रोपण का कार्य कर रही है। संस्था के माध्यम से 8 प्रजातियों के पौधों का रोपण निःशुल्क किया जा रहा है। जिसमें सागौन, खमेर, शीशम, जाम, जामुन, कटहल, मुंगना और बांस के पौधे लगाए जा रहे है। तब मैनें अपने खेत की मेंढ पर नदी किनारे होने वाले कटाव को रोकने के लिए 1 हजार बांस के पौधों का रोपण कराया। कंपनी द्वारा जब पौधे रोपित कर दिए गए तो मैनें स्वयं इनके रखरखाव हेतु अपने पैसों से तार फेंसिंग करा दी। मैं कंपनी का धन्यवाद ज्ञापित करता हूं कि उन्होंने किसानों के लिए इतनी अच्छी योजना चलाई है।

किशोर भुसारी
(नर्सरी प्रबंधक) सुखतवा नर्सरी

मैं किसान रोपवाटिका मोर्शी जिला अमरावती स्वयं को गौरवान्वित और संतुष्ट महसूस करता हूं कि मुझे रुपई एग्री फॉरेस्ट प्रा.लि. हरदा द्वारा चलाए जाने वाले निःशुल्क पौधरोपण अभियान का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे वृक्षारोपण हेतु 30 लाख पौधे तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई थी। जिसमें हम पूरी तरह सफल हुए। इस दौरान मुझे रुपई कंपनी के एमडी गौरीशंकर मुकाती, डायरेक्टर संजय चौधरी, संजय तेंगुरिया तथा स्टॉफ का निरंतर मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त होता रहा। श्री मुकाती के नेतृत्व में हमने नर्सरी हेतु जमीन, पानी, लेवर, व्यवस्थापन आदि कार्य को निर्धारित समय सीमा में पूरा करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल किया। इस दौरान हजारों लोगों को रोजगार का अवसर मिला। कार्य दौरान जिस अपनेपन का एहसास हमें हुआ उसे शब्दों में उल्लेख नहीं कर सकते।

राहुल जोठे
(फील्ड आफीसर) केसला सेक्टर

मैं पिछले सात महीनों से रुपई एग्री फॉरेस्ट लिमिटेड में फील्ड ऑफिसर के पद पर कार्यरत हूं। हमने किसानों से उनकी उपयोगहीन जमीन पर वृक्षारोपण के लिए संपर्क किया, उन्हें इसके भविष्य के फायदों से अवगत कराया। जब किसानों को बताया कि किस प्रकार आपके खेतों की मेंढों और बागड़ में लगाए जाने वाले पौधे आने वाले वर्षों में आपकी स्थायी आय का स्त्रोत बनेंगे इससे जहां आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा तो वहीं पर्यावरण को भी बड़ा फायदा होगा। दूसरी बात यह कि आप लोगों को पौधे निःशुल्क मिल रहे है और इसके लगाने पर भी आपको कोई खर्च या मेहनत नहीं करना पड़ रही है तो किसानों ने सहर्ष अपनी सहमति दी। हमने लिखित सहमति प्राप्त कर ग्राम पंचायत भरगदा में लगभग 400 किसानों की जमीन पर 1 लाख 46 हजार पौधों का रोपण किया है। आज मुझे प्रसन्नता है कि आने वाले मात्र 10-15 सालों में ही मेरे गांव में चारों ओर हरियाली होगी। लोगों की जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन आएगा, साथ ही किसानों को स्थायी आमदनी प्राप्त होने लगेगी।

कृषक रेवती प्रसाद
ग्राम-मलोथर, तहसील-इटारसी

मैनें अपने खेत की मेंढ पर 600 सागौन के पौधे रुपई एग्री फॉरेस्ट प्रा.लि. के कार्बन क्रेडिट प्रोजेक्ट के तहत लगवाए है। मुझे इनकी लगवाई पर कोई खर्चा नहीं आया है। बस कंपनी के अधिकारियों को मैनें अपने खेत में पौधे लगाने की सहमति प्रदान की। अब मेरी जवाबदारी है कि मैं इन पौधों को सुरक्षित रखूं। मैं इन्हें पाल पोसकर बड़ा करूंगा तो इसका फायदा मुझे और मेरे परिवार को ही होगा।

संदीप मालवीय
(फील्ड आफिसर) रेहटी, जिला-सीहोर

हमने सीहोर जिले की रेहटी में व्हीएनव्ही एडवाइजरी के सौजन्य से रुपई एग्री फॉरेस्ट प्रा.लि. हरदा द्वारा संचालित परियोजना आत्मनिर्भर कृषक-आत्मनिर्भर कृषि अंतर्गत 16 लाख निःशुल्क पौधों का रोपण किया है। इस वर्ष माह जुलाई-अगस्त में तहसील के 46 पटवारी हल्कों में 2740 किसानों से इस परियोजना के तहत पंजीयन कराकर अपनी निजी भूमि के मेंढों पर एक भविष्य निधि के रुप में सागौन, खमेर जैसे इमारती लकड़ी के पौधों का रोपण कराने का कार्य शुरु किया। इस दौरान किसानों की मांग अनुरुप इमारती लकड़ी के साथ ही कई किसानों ने अपनी खेतों की मेंढों पर फलदार पौधों में मूंगना, जाम, कटहल के पौधे भी लगवाए है। किसानों की इच्छा अनुसार उनकी उपयोहीन भूमियों पर कंपनी ने संपूर्ण रोपण निःशुल्क कराया है। इसी परियोजना के तहत निनोर के एक युवा किसान मोहन पिता सुखराम द्वारा अपने पास उपलब्ध एक एकड़ भूमि की मेंढ पर 100 सागौन के पौधे लगवाकर अन्य किसानों को प्रेरित किया। मात्र दो माह में इन पौधों ने अप्रत्याशित ग्रोथ हासिल की है। हाल ही में जब हमने इन पौधों का निरीक्षण किया तो इसमें 94 पौधे 3 से 5 फिट की हाईट ले चुके है। इसे देखकर किसान भी गदगद है। चूंकि वह किसान यह जानता है कि आने वाले 15 वर्षों बाद उसके ये पौधे 18 से 20 लाख रुपए की आमदनी प्रदान करेंगे। जबकि उसे 1 एकड़ भूमि से सालाना 40 से 50 हजार रुपए तक ही आय प्राप्त हो पाती है। वह भी तब जब उस किसान के पास पर्याप्त कृषि जोत के संसाधन उपलब्ध हो। इस तरह वह 15 वर्षों में अगर मौसम अनुकूल रहता है तो एक एकड़ खेत की जोत कर 7-8 लाख रुपए की आय ही प्राप्त कर पाता है। लेकिन केवल मेंढों पर लगाए गए इन पौधों से उन्हें लगभग 20 लाख रुपए की आय होगी। यह उसकी भविष्य निधि होगी।

50 गांवों में लगाए 18 लाख 67 हजार पौधे

अनिल मेहरा
सेक्टर प्रभारी, केसला

मैं इटारसी तहसील की ग्राम पंचायत पथरोटा के ग्राम कुबड़ाखेड़ी का रहने वाला हूं। मुझे रुपई एग्री फारेस्ट द्वारा केसला ब्लाक का सेक्टर प्रभारी नियुक्त किया गया है। हमारे कार्य क्षेत्र अंतर्गत 50 गांव में पौधे लगाए जाना था। जिसके लिए मेरे 17 साथियों के सहयोग से टीम भावना के साथ हमने 18 लाख 67 हजार पौधों का रोपण किया है। रुपई के संस्थापक दादा गौरीशंकर मुकाती जी के मार्गदर्शन में हमारी टीम ने गांव-गांव पहुंचकर किसानों से संपर्क किया। उन्हें कंपनी की इस निःशुल्क पौधरोपण योजना के बारे में बताने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन से होने वाले खतरे तथा इस योजना से किसानों की आर्थिक स्थिति में आने वाले बदलाव को लेकर जानकारी दी गई। चूंकि जब हमें इस कार्य करने के लिए आदरणीय मुकातीजी ने प्रशिक्षण दिया था तब उन्होंने हमें इसके सभी पहलुओं से अवगत कराया था। उन्होंने बताया था कि ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से किस तरह पृथ्वी पर व्याप्त जीवन प्रभावित होता है। वहीं इस पौधरोपण से पर्यावरण का संरक्षण और किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। इस कार्य से स्थानीय स्तर पर किस प्रकार हजारों लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। इस प्रशिक्षण में दी गई जानकारियों को आत्मसात करते हुए मेरे द्वारा अपने क्षेत्र के युवाओं को जोड़कर एक टीम तैयार की गई। तत्पश्चात हमने सभी हलके और ग्राम पंचायत में प्रेरकों की नियुक्ति कर किसानों से पौधरोपण करवाने के लिए उनकी लिखित सहमति हासिल की। किसानों में पौधरोपण के लिए जागरुकता लाने के लिए हमने दीवार लेखन, पम्पलेट, ग्राम चौपाल जैसे प्रचार माध्यमों का उपयोग भी किया। जिसके सकारात्मक परिणाम हमको प्राप्त हुए। किसान हमसे इस योजना के तहत जुड़ते गए और हम अपने लक्ष्य के अनुसार 18 लाख 67 हजार पौधे रोपित करने में सफल हुए। इस दौरान हमारे द्वारा क्षेत्र में किए जाने वाले कार्यों का मौके पर व्हीएनव्ही एडवाइजरी के डायरेक्टर संदीप चौधरी जी, आईएमपीसीए के डायरेक्टर विक्रांत तिवारी जी, रुपई एग्री फारेस्ट के संस्थापक गौरीशंकर मुकाती जी द्वारा निरीक्षण भी किया जाता रहा। इन वरिष्ठों के मार्गदर्शन से हमें कार्य करने में और आसानी हुई। वहीं किसानों ने भी निःशुल्क पौधरोपण अभियान को लेकर कंपनी के प्रति धन्यवाद प्रगट किया। चूंकि इस महाअभियान से स्थानीय पर्यावरण को तो लाभ होना ही है, लेकिन वर्तमान में हमारे क्षेत्र के सैकड़ों लोगों को नर्सरी में तथा पौधरोपण में रोजगार प्राप्त हुआ है। हमारी टीम में मेरे सहयोगी राहुल धोटे, प्रताप बारस्कर, रविन्द्र, उमेश मिश्रा, राजनी काजले, राखी मेडम, सुषमा, सरिता, रुपसिंह इरपाचे, शर्मिला भल्लावी, निर्मला ठाकरे, चेतन यादव, भगवानदास यादव, हंसराज, शिवराम, संतराम बामने, संदेश धुर्वे सभी ने प्रेरक के तौर पर कार्य करते हुए 90 रोपण प्रमुख और 1200 मजदूरों से कार्य करवाते हुए इस महाभियान को सफलता प्रदान कराई है। मैं अपनी इस संपूर्ण टीम के प्रति भी धन्यवाद व्यक्त करता हूं कि उन्हीं के सहयोग से आज यह सफल हो पाया है।

कृषक अंकित सिंह राजपूत, डोलरिया

रूपई एग्री फॉरेस्ट के सौजन्य से प्रकृति की सुंदरता में चार चांद लगाने के स्वर्णिम कार्य का हिस्सा बनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। आत्मनिर्भर कृषक आत्मनिर्भर कृषि की गरिमामय पहल का मुझे हिस्सा बनने का अवसर प्राप्त हुआ। जिस प्रकार किसी पिता को अपने परिवार और बच्चों के भविष्य की और बच्चों को अपने मां बाप के भविष्य की चिंता रहती उसी प्रकार हमारा भी फर्ज है कि हम प्रकृति और अपनी धरती मां की सुंदरता और वनों की रक्षा के लिए चिंतित रहे और कर्मठ बने। सभी से मेरा विनम्र आग्रह है कि जिस प्रकार हम अपनों से और अपने आप से प्रेम करते है उसी प्रकार प्रकृति से प्रेम करें। 'सुरक्षित होगा वन-संरक्षित होगा जीवन'

कृषक गौरीशंकर मीना, ग्राम-सिलारी, इटारसी

मैं अपने जीवन में हमेशा वृक्ष लगाते आया हूं। जब मुझे पता चला कि रुपई एग्री फॉरेस्ट द्वारा किसान और पर्यावरण हित में निःशुल्क वृक्षारोपण कराया जा रहा है तो मैनें अपने और अपने परिवार के सभी भाईयों के खेतों की भी मेड़ पर सागौन के वृक्ष लगवाए हैं। हम किसान यह अच्छे से जानते है कि जब फसलों की देखरेख अच्छी होती है तो उसके परिणाम भी अच्छे मिलते है। इसी तरह कंपनी द्वारा निःशुल्क पौधे रोप दिए गए है। अब हमारी जवाबदारी है कि हम बच्चों की तरह उनकी देखरेख करें। वैसे भी मुझे इसका काफी शौक है तो मैं हमेशा देखभाल करूंगा ताकि यही वृक्ष आगे चलकर मेरी आमदनी भी बढ़ाएंगे और मेरी भविष्य निधि भी तैयार करेंगे। यह बात तो हुई व्यवसायिक दृष्टि से दूसरी बात यह है कि हमने हमेशा अपने पूर्वजों द्वारा लगाए गए पौधों को काटते देखा है लगाते कम। यह पहला अवसर है जब हम इतनी बड़ी तादाद में पौधे लगा रहे है। अगर हमने इनकी देखरेख की तो यह आने वाले पीढ़ी के लिए तोहफा होगा।

जीविका के लिए सूर्य का प्रकाश

ग्रामीण खेती में सौरपंपों का एकीकरण

■ Tuman Baruah
Bangalore

2021 तक भारत के कृषि क्षेत्र का देश के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 17 प्रतिशत योगदान था और इसने लगभग 50 प्रतिशत कार्य बल को रोजगार दिया था। हालाँकि इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसमें सिंचाई के लिए बिजली की अविश्वसनीय पहुंच भी शामिल थी। दूरदराज और ऑफ-ग्रिड क्षेत्रों में पारंपरिक डीजल पंप अक्सर एकमात्र विकल्प होते थे, जिससे किसानों की परिचालन लागत और पर्यावरणीय प्रभाव बढ़ता था।

कृषि आवश्यकताओं के लिए हरित ऊर्जा

बिजली की सीमित पहुंच से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करते हुए कृषि में सौरपंपों का आगमन भारतीय कृषि परिदृश्य में एक भरोसेमंद ऊर्जा समाधान के रूप में उभरा है। ये पंप देश को पूरे वर्ष मिलने वाली प्रचुर धूप का उपयोग करने के लिए सौर पैनलों का उपयोग करते हैं। ये पैनल आमतौर पर उपयुक्त स्थानों जैसे छतों या खुले मैदानों पर लगाए जाते हैं, जो सूरज की रोशनी को ग्रहण करते हैं और इसे विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित

करते हैं। यह बिजली आमतौर पर पानी के पंप से जुड़ी एक मोटर को शक्ति प्रदान करती है, जो बोरवेल, खुले कुओं, जलाशयों, झरनों और अन्य जलस्रोतों से पानी खींचने के लिए यांत्रिक शक्ति का उत्पादन करती है।

ये सौरपंप अनियमित बिजली आपूर्ति और महंगे डीजल ईंधन पर किसानों की निर्भरता को कम करने में सहायक रहे हैं। जीवाश्म ईंधन से चलने वाले पंपों को सौर ऊर्जा से बदलकर, किसान ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम कर सकते हैं और स्वच्छ और हरित वातावरण में योगदान दे सकते हैं। इसके अलावा यह बदलाव जलवायु परिवर्तन से निपटने और अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने की भारत की प्रतिबद्धता के अनुरूप है।

किसानों का आर्थिक उत्थान

जबकि सौरपंप निर्विवाद रूप से टिकाऊ खेती में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं, इसके लाभ ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी से कहीं अधिक हैं। ये पंप ऊर्जा लागत को कम करके आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में योगदान करते हैं, जिससे खेती की आवश्यक चीजों के लिए अधिक धन उपलब्ध होता है। एक अन्य कारक लगातार जल आपूर्ति है, जो फसल की पैदावार और आय बढ़ाने में मदद करता है। किसान महंगे ऋणों से बच सकते हैं, अपनी आय में विविधता ला सकते हैं और सरकारी सब्सिडी तक पहुंच सकते हैं।

इसके अतिरिक्त सौरपंपों से जुड़ी कार्बन परियोजनाओं में भागीदारी अतिरिक्त आय प्राप्त करने का अवसर पैदा करती है क्योंकि सौरक्षेत्र स्थापना और रखरखाव के मामले में रोजगार पैदा करता है। इस प्रकार स्थानीय समुदायों को काफी लाभ हुआ। संक्षेप में सौरपंप भारतीय किसानों के लिए आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने, वित्तीय बोझ को कम करने और ग्रामीण समृद्धि को बढ़ावा देने में सहायता कर सकते हैं।

1 करोड़ 20 लाख पौधरोपण अभियान का हिस्सा बने जागरुक किसान

किसान अशोक/शालिगराम गौर
ग्राम- कोटलाखेड़ी, तह. डोलरिया
प्रजाति : जाम - 400

किसान प्रहलाद सिंह दीपचंद
ग्राम- गिल्लोर, सीहोर
प्रजाति : सागौन- 1600

किसान विजेंद्र सिंह भाटी
ग्राम- नंदगांव, भैरून्दा, जिला-सीहोर
प्रजाति : सागौन - 440

किसान इरशाद आमिर अब्दुल
ग्राम- नेहरूगांव, भैरून्दा, जिला-सीहोर
प्रजाति : सागौन - 1000

किसान जितेन्द्र लक्ष्मण सिंह
ग्राम- रोहना, नर्मदापुरम
प्रजाति : सागौन- 100, कटहल-60, जाम-100

किसान बालकृष्ण रामकरण
ग्राम- चांदाग्रहण, सीहोर
प्रजाति : सागौन- 500

किसान शिवचरण बालकृष्ण
ग्राम- गिल्लौर, भैरून्दा, जिला-सीहोर
प्रजाति : सागौन- 700

किसान लिखीराम रमेशचंद्र
ग्राम- कासदाखुर्द चारटेकरा
350 पौधे (कटहल, मुंगना, जाम)

किसान डालचंद हरदराम
ग्राम- बोरखेड़ा, इटारसी
प्रजाति : सागौन- 400

किसान महेश दीपचंद
ग्राम- गिल्लौर, सीहोर
प्रजाति : सागौन- 900

किसान मुकेश चौधरी
ग्राम- जुझारपुर, इटारसी
प्रजाति : मुंगना- 800

किसान परसराम सुखचरण
ग्राम- नीमखेड़ा चौकीपुरा
450 पौधे (सागौन, जाम, मुंगना)

किसान डोरीलाल बालमुकुंद
ग्राम- पर्रदेह, डोलरिया
प्रजाति : सागौन- 500, मुंगना-450, बांस-50

किसान मोहन सुखराम
ग्राम- नीनोर, सीहोर
प्रजाति : सागौन- 100

किसान रमेश
ग्राम- बाबईखुर्द, इटारसी
प्रजाति : सागौन- 500, मुंगना-450, बांस-50

किसान सुरेश सिंह शंकर सिंह
ग्राम- रिछी, सिवनी मालवा
प्रजाति : सागौन- 1000, बांस-1500

किसान दर्शन सिंह महेश
ग्राम- देशमोहिनी, नर्मदापुरम
प्रजाति : सागौन- 400, जाम-100, कटहल-70

किसान विजय सिंह मांगीलाल
ग्राम- नंदगांव, सीहोर

किसान कमल सिंह हीरालाल
ग्राम- बडोदिया, भैरून्दा, जिला-सीहोर
प्रजाति : सागौन- 1000, कटहल-50

किसान तेजराम रामभरोस
ग्राम- डुडूगांव, डोलरिया
प्रजाति : सागौन 300, जाम 270, कटहल 10, मुंगना 10

एक पेड़ को आकार लेने के पीछे की कहानी कम रोचक नहीं होती है। प्राकृतिक रुप से उगने वाले पेड़ और नर्सरी में तैयार कर रोपे जाने वाले पेड़ों में काफी भिन्नता होती है। नर्सरी में पौधों को बच्चों की तरह पाला पोसा जाता है। रोपण से पहले यह देखा जाना भी आवश्यक होता है कि किस जलवायु में कौन सा पौधा जीवित रह पाएगा और वहां की मिट्टी की गुणवत्ता उसके अनुरुप है अथवा नहीं। पौधे की जीवंतता भी उसकी प्रजाति और उस क्षेत्र की जलवायु के साथ ही उसे तैयार की जाने वाली विधि तथा रोपण की प्रक्रिया पर निर्भर करती है।

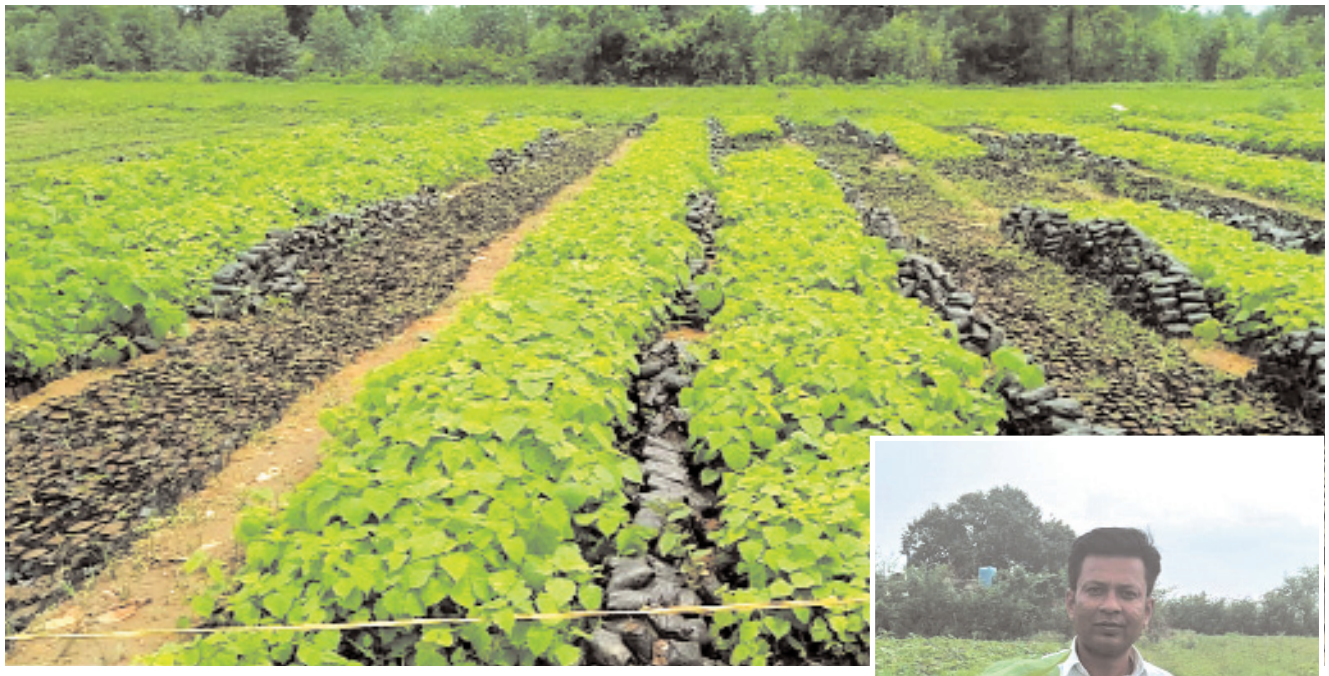

आसान नहीं है नर्सरी में पौधे तैयार करना

■ संजय चौधरी
नर्सरी मैनेजर

जब भी हम प्रकृति पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, भू-जल संवर्धन, मिट्टी का कटाव रोकना, पोषण वाटिका से विभिन्न प्रकार के फलों द्वारा कुपोषण दूर करने की बात करते है तो इन सभी कार्यो हेतु हमें वृक्षारोपण की भूमिका बखूबी ज्ञात है। इन महत्वपूर्ण मुद्दों को ध्यान रखते हुये विभिन्न सामाजिक संस्थानों एवं सरकारों और व्यक्तिगत तौर पर भी सतत पौधारोपण किया जाता है। वृक्षारोपण की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि पौधा लगाने वाले व्यक्ति की रुचि कितनी है और उसे इस बारे में कितनी जानकारी है। साथ ही लगाये जाने वाले पौधे की गुणवत्ता, प्रजाति एवं उपलब्धता कैसी है, क्या वह स्थानीय प्रजाति का पौधा है या अन्य किसी सुदूर क्षेत्र का मूल पौधा है, यह भी पौधे की जीवन्तता को प्रभावित करने वाले तत्व है।

नर्सरी में कई विधियों द्वारा पौधेरोपण हेतु तैयार किये जाते है। मुख्य रूप से बीज द्वारा, कलम द्वारा, कंद द्वारा प्रकंद द्वारा रूट सूट/राइजोम द्वारा या टिश्यू कल्चर पद्धति द्वारा बड़े पैमाने पर पौधे तैयार किये जाते हैं। जब हम व्यासायिक तौर पर नर्सरी निर्माण करते है तब पौधों की गुणवत्ता, जीवन्तता के साथ साथ लागत न्यूनतम हो इस बात का विशेष ध्यान रखते है।

सबसे पहले नर्सरी हेतु भूमि का चयन किया जाये जो रोड़ से जुड़ी हो, पानी एवं लाइट की व्यवस्था हो, भूमि में जल भराव की समस्या न हो लगभग समतल हो। सुरक्षा हेतु काटा, तार फेंसिंग की जाती है। भूमि समतलीकरण हेतु प्लाऊ, कल्टीवेटर, रोटावेटर किया जाता है ताकि मिट्टी महीन, बारीक एवं घास कचरा मुक्त हो जो । एक छोटा स्टॉक पॉइंट सामग्री एकत्रीकरण के लिए बनाया जाता है। चूँकि हम व्यावसायिक नर्सरी की तैयारी कर रहे है और पौधो की संख्या 10 लाख प्रति नर्सरी मान रहे है और यह सभी पौधे इसी साल रोपित किये जायेंगे इसलिए पालीथिन का साइज मध्यम आकर यानि 5×7 इंच लिया जा रहा है।

कार्य पद्धति

- 1×10 मीटर के बेड बनाये है जो 4-5 इंच गहरे एवं लेवल समतल हो।
- हर बेड के बाद एक मीटर की जगह रास्ते के लिए छोड़ी जाएगी।
- पन्नी में भरने के लिए नदी किनारे की मिट्टी/कपा बुलाया जाता है।
- मिट्टी को छन्ने से छानकर कचरा, पन्नी, पत्थर आदि निकला जाता है।
- मिट्टी 70 प्रतिशत+20 प्रतिशत गोबर खाद + 10 प्रतिशत रेत मिश्रण तैयार किया जाता है। गोबर की खाद पूर्णतः पकी हुई एक वर्ष से पुरानी हो। रेत इसलिए मिलाई जाती हैं ताकि जल निकास ठीक से हो पाए।
- मिश्रण को 5×7 इंच की पॉलीथिन में भरा जाता है।
- मिश्रण भरने के लिये टिन के डिब्बे का उपयोग किया जाता है।
- पन्नी भरकर बेड में एक रूप जमा दी जाती है।
- फरवरी/मार्च माह तक सभी में बीज/सागौन रूट शूट का रोपण किया जाता है।

- सागोन का पौधा रूट शूट से तैयार किया जायेगा यह रूट शूट अंगूठे के आकार में मोटा एवं 4-5 इंच लम्बाई का होगा।
- बीज/रूट शूट को रोपण के समय बायो-फंगीसाइड में डुबाकर कुछ समय रखा जाता है।
- हर सातवे दिन स्प्रिंगकलर से सिंचाई होती है।
- घास आदि कि निंदाई महीने में एक बार की जाती है।
- दो माह बाद या पौधा एक फीट का होने पर उसकी शिफ्टिंग की जाती है ताकि एक साइज के पौधे एक बेड में आ जाये जिससे छोटे पौधो को भी बढ़ने के लिए उपयुक्त धूप आदि मिल जाए।
- इसके बाद 15 दिनों के लिए सिंचाई रोक कर पौधों की हार्डनिंग की जाती है।
- रोपण के समय स्वस्थ पौधों को ट्राली में मजदूरों द्वारा जमाकर भेजा जाता है।
- छोटे या कमजोर पौधो को पुनः बेड में जमा दिया जायेगा ताकि वो स्वस्थ होकर बाद में काम में आ सके।

सभी प्रयासों एवं मापदंड का पूर्ण प्रयोग करने के बाद भी लगभग 10 प्रतिशत पालीथिन खाली यानि पौधा रहित रह जाती है इन बची हुई पालीथिन में सीजन पर आने वाले ताजे बीज लगाकर उपयोग किया जा सकता है।